P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

इतिहास, परम्परा और आधुनिकता साहित्य के सन्दर्भ में

गोपीराम शर्मा
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
डॉ. भीमराव अम्बेडकर
राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर

चन्द्रपाल जांदू
व्याख्याता,
इतिहास विभाग,
डॉ. भीमराव अम्बेडकर
राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर

सारांश

अतीत की घटनाओं का क्रम बद्ध अध्ययन इतिहास कहलाता हैं। समाज को गतिशील बनाने वालें संकल्पों को परम्परा कहते है इसी प्रकार नवीन ज्ञान विज्ञान, टेक्नोलॉजी के फलस्वरूप उत्पन्न विषम मानवीय स्थितियों के नये, गैर रोमेंटिक और अमिथकीय साक्षात्कार का नाम आधुनिकता हैं। इतिहास, परम्परा और आधुनिकता में अन्तर्सम्बन्ध हैं। आधुनिकता के लिए ऐतिहासिक बोध अपेक्षित हैं। बिना इतिहास और पुरातनता का अनुभव किए हम नयी बात नहीं कर सकते। मनुष्य की यर्थाथ अनुभूतियां इतिहास बनती हैं। इसी अतीत को वर्तमान में ढ़ालकर और भविष्य के अनुकूल बताकर जो सामाजिक व्यवस्था का रुप देते हैं तो वह आधुनिकता बन जाती हैं। परम्परा और आधुनिकता भी एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। कोई सहज विचार स्वीकृति पाकर परम्परा बनता है और वैज्ञानिक दृष्टि से पोषित होकर आधुनिकता बन जाता हैं। साहित्य में इन तीनो का सामंजस्य मिलता हैं। कबीर, तुलसी, जायसी, प्रसाद, अज्ञेय के साहित्य में ये तीनों व्याप्त हैं।

मुख्य शब्द : इतिहास, परम्परा, आधुनिकता, साहित्य, मानव, समाज, अन्तर्सम्बन्ध, काल, गतिशीलता, सामंजस्य, स्वत्व

प्रस्तावना

समाज की काल चेतना से जुड़कर 'इतिहास', 'परम्परा' और 'आधुनिकता' जैसी अवधारणाओं ने अनेक अर्थग्रहण कर लिए हैं। सामान्यतः संस्कृति में होने वाले परिवर्तनों व उसकी निरन्तरता को समझने के लिए इन शब्दों का व्यवहार किया जाता है। संस्कृति एक गतिशील और समावेशी प्रक्रिया है, इसकी पहचान निरन्तर होनी चाहिए।

शाब्दिक दृष्टि से 'इतिहास' का अर्थ है – ऐसा ही था या ऐसा ही हुआ। अतीत की घटनाओं का कालक्रमानुसार विवरण इतिहास कहलाता है। अतीत के गर्भ में तो बहुत कुछ छुपा हुआ है अतः इतिहासकार अपनी रूचि और दृष्टि के अनुसार अतीत की मुख्य घटनाओं को ही उद्घाटित करते हैं। ''जिस अतीत का इतिहासकार अध्ययन करता है वह मूर्त अतीत नहीं है अपितु ऐसा अतीत है जो कुछ अर्थों में वर्तमान में विद्यमान होता है।''[1] इतिहास का प्रयोजन आत्म ज्ञान की प्राप्ति है। मनुष्य स्वयं को जानना चाहता है, अपने स्वभाव से परिचित होना चाहता है, इसके लिए एक सूत्र है कि उसने क्या किया है? ''ऐतिहासिक अध्ययन वस्तुतः आत्मगवेषणा की प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप अधिगत आत्मबोध की सहायता से मनुष्य अपने वर्तमान कालिक जीवन को सुचारू रूपेण नियंत्रित कर सकता है।''[2]

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में सामयिक तत्वों की अपेक्षा चिरंतन तत्त्वों को अधिक महत्त्व दिया गया है। भारतीय इतिहासकारों ने उन प्रवृत्तियों का अनुसंधान किया है जो मनुष्य को स्थायी और अमर बनाती हैं। भारतीय लोग वर्तमान भौतिक जीवन की अपेक्षा आगामी जीवन में अधिक रूचि रखते थे, इसलिए उन्होंने दृष्यमान जगत् को अधिक महत्त्व नहीं दिया। इसी प्रवृत्ति को लक्षित करते हुए बहुत विद्वान यह मानते रहे कि प्राचीन भारतीयों में ऐतिहासिक दृष्टि का अभाव था। ''काल विवेचन इतिहास रचना का आधार है और भारतीयों ने समय को सदैव गौण स्थान दिया है। अतएव तिथिक्रम के यथार्थ प्रस्तुतीकरण की ओर से वे उदासीन रहे हैं।''[3] इतिहास के प्रति पाश्चात्य दृष्टिकोण भिन्न है। उन विद्वानों ने इतिहास को खोज, गवेषणा और अनुसंधान से सम्बन्धित किया। हेरोडोटस के बाद विको, कांट, होगल, डार्विन, स्पेंगलर, टायनबी ने इतिहास के स्वरूप की अपनी–अपनी तरह से व्याख्या की। पाष्चात्य इतिहासकार इतिहास का अध्ययन केवल भौगोलिक एवं राजनैतिक सीमाओं में बंधकर नहीं करते अपितु उसे समस्त मानव सभ्यता के विकास के रूप में स्वीकारते हैं। वे इतिहास की स्थूल घटनाओं की अपेक्षा सूक्ष्म प्रवृत्तियों पर भी बल देते हैं। स्पष्ट है कि इतिहास का अध्ययन आज व्यापक और सूक्ष्म रूप प्राप्त कर चुका है।

'परम्परा' का अर्थ है 'पर' अर्थात श्रेष्ठ या उत्तरवर्ती, उसका अतिक्रमण करने वाली श्रेष्ठतर उत्तरवर्ती 'परा' धारा। इस प्रकार परम्परा में परिवर्तन की न केवल संभावना है, बल्कि वह निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया भी है। इस प्रकार परम्परा हमारे ऊपर नहीं, भीतर स्थित है। बहुत से लोग परम्परा और रूढि को एक मान लेते हैं जबकि रूढि इससे भिन्न है। रूढि ऐसी परिणति है जहाँ आगे परिवर्तन की संभावनाएँ बंद या कम हो जाती है। हर समाज में रूढियाँ होती हैं पर रूढियाँ केवल रूढियाँ रह जाए तो समाज की गति बाधित हो जाती है। इसलिए समाज को गतिशील बनाने के लिए जिस संकल्प की आवश्यकता होती है उसे परम्परा कहते हैं। ''परम्परा की दृष्टि हमेशा भविष्यत् की ओर है, वह भविष्यत् की दृष्टि से अतीत का पुनर्दोहन करती है और वर्तमान को अर्थ की तलाश के लिए बेचैन करती है, जबकि रूढि टूटती है तो चली जाती है, परम्परा टूटती है, तो बढ़ जाती है।''[4] भारतीय समाज परम्परावादी रहा है। हमारा समाज इतिहास से बन्धा नहीं रहा। पश्चिमी सम्पर्क में आने पर हमने परम्पराओं को अनदेखा करना शुरू किया। हमारी सोच बनी कि आधुनिकता की दौड़ में हम पीछे रह जायेंगे। हम अपने पारम्परिक मूल्यों की अवहेलना करने लगे। इस क्रम में हम परम्पराओं को छोड़कर अधिक रूढिवादी हो गए। विशुद्ध वस्तुवादी और वैज्ञानिकता के नकली दम्भ ने हमको देश, संस्कृति से काट दिया। विद्यानिवास मिश्र कहते हैं – ''परम्परा के विस्मरण की इस तीव्रता की बात करते हुए परम्परा की कोई वकालत नहीं कर रहा हूँ, मैं केवल इंगित कर रहा हूँ कि परम्परा अपनी जमीन होती है, उसी जमीन से कटकर कोई विकास अपना विकास नहीं होता।''[5]

आधुनिकता के सम्बन्ध में विचारकों का दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं रहा। आधुनिक, आधुनिकबोध और आधुनिकीकरण जैसे समानार्थी शब्द आधुनिकता के साथ प्रयुक्त होते हैं। सामान्यतः लोग आधुनिक का अर्थ 'नूतन' और 'नवीन' से लेते हैं। यह शब्द विशेषण और काल दोनों के लिए प्रयुक्त होता है। आधुनिकता एक बौद्धिक प्रक्रिया होने के साथ एक अन्वेषण है। ''आधुनिकता विभिन्न प्रभावों से उत्पन्न चेतना है जिसको निरन्तरता के अन्तर्गत रखा जा सकता है।''[6] आधुनिकता को कभी नगरीकरण, कभी औद्योगिकीकरण तो कभी पाश्चात्यीकरण के साथ जोड़ा जाता रहा है। आधुनिकता केवल बाह्य वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन अथवा सभ्यता के अन्य स्थूल रूपों में नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर रहती है। डॉ. बच्चन सिंह लिखते हैं – ''वस्तुतः नवीन ज्ञान–विज्ञान, टेक्नोलॉजी के फलस्वरूप उत्पन्न विषम मानवीय स्थितियों के नये, गैर रोमेन्टिक और अमिथकीय साक्षात्कार का नाम आधुनिकता है।''[7] सामान्यतः आधुनिकता से आशय देशकाल के बोध से लिया जाता है। आधुनिकता वस्तुतः मानवीय प्रगति को रेखांकित करती चलती है और नये परिवेश को स्वीकारते हुए गतिशील है। आधुनिकता भीतर की चीज है। आधुनिकता एक दृष्टि है जिसे हम जीवन साधन के रूप में प्रयोग करते हैं। वास्तव में आधुनिकता, नवीनता और निरन्तरता से जुड़ी संकल्पना है। ''आधुनिक होना समयहीन होना और सीधे कह सकते हैं कि आधुनिक होना शाश्वत होना है..... आधुनिकता की समस्या काल सापेक्ष कम, व्यक्ति सापेक्ष ज्यादा है।''[8] इस प्रकार आधुनिक होना प्रगतिशीलता है। जो लोग आधुनिक नहीं, वे समय के साथ नहीं चल सकते।

इतिहास, परम्परा और आधुनिकता में अन्तर्सम्बन्ध भी है। आधुनिकता के लिए ऐतिहासिक बोध अपेक्षित है। बिना इतिहास और पुरातनता का अनुभव किए हम नयी बात नहीं कह सकते। किसी भी नयी स्थापना के लिए गूँजाइश तभी है जबकि हम पुराने को जान लें। ''आधुनिकता को इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि इतिहास तथ्यों और घटनाओं के अक्ष में बंद नहीं है। इतिहास मानव द्वारा निर्मित, आकांक्षित, विचारित वह यथार्थ अनुभूति है जो कालक्रम में बंधकर इतिहास बन जाता है। मनुष्य अपने अतीत को वर्तमान में ढालकर वर्तमान को भविष्य के अनुकूल बनाकर, उसे सामाजिक व्यवस्था का रूप देता है और उसे आधुनिकता के नाम से अभिहित किया जाता है।''[9] आधुनिकता को परम्परा के साथ भी जोड़ा गया है। परम्परा एक तरफ इतिहास की खबर लेती रही और दूसरी तरफ आधुनिकता खबर लेती रही। परम्परा और आधुनिकता अलग–अलग होते हुए भी एक–दूसरे से सम्बन्धित है। ''व्यक्ति का सहज विचार धीरे–धीरे परम्परा बन जाता है और परम्परा भी सहज परिवर्तित होकर आधुनिकता बन जाती है।''[10] कोई सहज विचार जब बहुत बड़ी स्वीकृति पा जाता है तो परम्परा के रूप में स्थापित हो जाता है। यदि प्रचलित विचारों के प्रति अस्वीकृति हो तथा वैज्ञानिक दृष्टि से पोषित हो तो वे आधुनिकता बन जाती है। परम्परा और आधुनिकता दोनों ही गतिशील है पर परम्परा की तुलना में आधुनिकता की गतिशीलता अधिक है। परम्परा में आस्था का अवलम्ब आवश्यक है पर आधुनिकता में विवेक, प्रमेय और यथार्थपरक दृष्टि ज्यादा है। परम्परा आधुनिकता का महत्त्वपूर्ण आधार है। इस प्रकार देखते हैं कि ''आधुनिकता से तात्पर्य अस्वीकार करना नहीं, अपितु जीवन्त परम्परा को स्वीकार करना है।''[11]

इतिहास, परम्परा और आधुनिकता एक ही दिशा के सहयात्री हैं। हिन्दी साहित्य में इनका सामंजस्य देखने को मिलता है। इसी सामंजस्य के कारण साहित्य समय के कठोर आघातों से अपने को बचा पाया है। कबीर, तुलसी का साहित्य हो या भारतीय व मुस्लिम संस्कृति का समन्वय करता जायसी का साहित्य हो, सबमें इतिहास, परम्परा का मेल मिलता है। यही समन्वय प्रसाद की 'कामायनी' में मिलता है। अज्ञेय के काव्य में इतिहास, परम्परा और आधुनिकता का मिलाप व्याप्त है। 'नदी के द्वीप' या 'दीप अकेला' समवाय के उदाहरण हैं। भारतीय साहित्य विविधता में एकता को स्वीकार करता है। हम अपने स्वत्व को भी महत्त्व देते हैं और आवश्यकता पड़ने पर स्वत्व भुलाकर समाज का अंग बन जाते हैं। हमारे जीवन के केन्द्रीय मूल्य भक्ति, आस्था, प्रेम और आशावादिता है। हम अपनी परम्परा और इतिहास में ही बंधे नहीं हैं, समयानुसार आधुनिक हो रहे हैं और आधुनिकता के बिगड़ते रूपों के कारण पारस्परिक मूल्यों में हो रहे क्षरण का अहसास भी हमको है। हमारा साहित्य आधुनिकता के दुष्परिणामों की ओर भी संकेत देता है तथा

इतिहास और परम्परा के सकारात्मक रूपों को बल देता रहता है। दूसरी ओर जड़ परम्पराओं को छोड़कर आधुनिकता को अपनाता जा रहा है।

स्पष्ट है कि इतिहास, परम्परा और आधुनिकता के बीच अन्तर्सम्बन्ध है। साहित्य में तीनों का समवाय मिलता है। साहित्य इनका समर्थक, उद्घाटक और पोषक रहा है।

उद्देश्य

इस शोध आलेख के द्वारा इतिहास, परम्परा और आधुनिकता जैसी अवधारणा को समझा जा सकेगा तथा ये परस्पर सम्बन्धित हैं, इस विषय को उद्घाटित किया जायेगा। साहित्य में ये बोध परस्पर गूंथे हुए मिल जाते हैं–इसका विश्लेषण हो सकेगा। यह आलेख इन अवधारणाओं के अन्तर्सम्बन्धों को रेखांकित करने में सफल होगा, जिससे विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं जिज्ञासुओं का ज्ञानवर्धन होगा।

निष्कर्ष

इतिहास, परम्परा और आधुनिकता जैसी अवधारणाएँ अलग– अलग या विपरीत न होकर अन्तर्सम्बंध भी रखती है। भारतीय साहित्य विविधता में एकता को स्वीकार करता हैं। हिन्दी साहित्य में इतिहास और परम्परा से बोध लिए गए हैं और इन्हें आधुनिक संन्दर्भो के अनुसार व्याख्यायित भी किया गया हैं। साहित्य मूल्यों पर निर्भर है हम मूल्यों के अनुसार आगे बढ़ रहे हैं। साहित्य इन तीनों का समर्थक, उद्घाटक और पोषक रहा हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कालिंग वुड – इतिहास : स्वरूप एवं सिद्धांत (सं. डॉ. गोविन्द चन्द्र पांडे), राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2000 ई., पृष्ठ – 171*
2. *गोविन्द चंद्र पांडे – इतिहास : स्वरूप एवं सिद्धांत, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2000 ई., पृष्ठ – 166*
3. *चन्द्रकांत गजानन राजे – बायोग्राफी एंड हिस्ट्री इन संस्कृत लिटरेचर, बॉम्बे यूनिवर्सिटी प्रेस, 1958 ई., पृष्ठ – 09*
4. *विद्या निवास मिश्र – हमारी परम्परा और हम, (इतिहास, परम्परा और आधुनिकता – सं.दयानिधि मिश्र), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015 ई., पृष्ठ – 54*
5. *वही, पृष्ठ – 55*
6. *डॉ. उर्मिला मिश्र – आधुनिकता और मोहन राकेश, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ – 01*
7. *डॉ. बच्चन सिंह – आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986 ई., पृष्ठ – 37*
8. *डॉ. चन्द्रभान रावत – आधुनिकता : एक पहचान, देवनागर प्रकाशन, जयपुर, 1985 ई., पृष्ठ – 11*
9. *डॉ. उर्मिला मिश्र – आधुनिकता और मोहन राकेश, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ – 05*
10. *वही, पृष्ठ – 06*
11. *सूर्य प्रकाश विद्यालंकार –सप्तक त्रय:आधुनिकता और परम्परा, शलभ बुक हाउस, मेरठ, 1980 ई.,पृष्ठ – 57*